शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

दक्षिण में हिन्दी सम्मेलन, चेन्नै (भारतीय हिन्दी परिषद्)

- प्रस्तुति : डा. अजय कुमार

स्नातकोत्तर विभाग जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बिहार

www.shodh.net

दक्षिण में हिन्दी सम्मेलन, चेन्नै (भारतीय हिन्दी परिषद्)

- प्रस्तुति : डा. अजय कुमार

विविध प्रकार के गंभीर घटनाक्रमों से भरे वर्ष 2009 का समापन हिन्दी के लिए अत्यन्त आशापूर्ण तथा सुखद रहा। एक समय दक्षिण में हिन्दी-विरोध का केन्द्र रहे महानगर चेन्नै में भारतीय हिन्दी परिषद् का सफल राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ। हर दृष्टि से सफल यह आयोजन कई मायनों में ऐतिहासिक रहा।

धुर दक्षिण में, अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों के बीच, जब इस सम्मेलन की रूपरेखा तय की जा रही थी तब उत्तर भारतीय हिन्दी प्रेमियों ने यह कल्पना भी न की होगी कि यह कार्यक्रम इतना सफल हो पाएगा। दरअसल, इस आयोजन की कामयाबी की पृष्ठभूमि उसी दिन तय हो गयी थी जिस दिन उसमें 'तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी, चेन्नै, और 'भाषा-संगम, चेन्नै' के अधिकारियों और सदस्यों की सहभागिता तय हो गयी थी। तमिलनाडु हिन्दी साहित्य आकादमी के अध्यक्ष डॉ0 दिलीप सिंह, उपाध्यक्ष डॉ0 निर्मला मौर्य, महासचिव डॉ0 मधु धवन ओर उनके अनगिनत हिन्दी प्रेमी कार्यकर्ताओं ने चेन्नै में हिन्दी सम्मेलन का जो भव्य समां बाँधा वह बरसों हमें विभोर करता रहेगा। मद्रास विश्वविद्यालय के भव्य अतिथिग्रह 'वर्ल्ड युनिवर्सिटी सर्विस सेंटर' का विशाल सभागार हिन्दी-द्रविड़ भाषाओं के परस्पर मार्मिक सम्मिलन का मूक गवाह बना।

हिन्दी और अन्य भारतीय भाषा-साहित्य के अन्तर्संबंधों पर केन्द्रित इस द्विदिवसीय सम्मेलन में हिन्दी की अपेक्षा अहिन्दी भाषी लेखकों - विद्वानों की अधिकता और सक्रिय भागीदारी इस सम्मेलन की मुख्य विशेषता रही। इस सम्मेलन में न तो भाषाई राजनीति की बू आयी और न हिन्दी के 'साम्राज्यवादी वर्चस्व के खतरे' के प्रति चौकन्नापन दिखा। त्रिभाषा फार्मूले के प्रचार का भी कोई जिक्र नहीं। सभी के वक्तव्य में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के भाषिक एवं साहित्यिक अन्तसंबंधों को और प्रगाढ़ बनाने की व्यावहारिक चिंता ही अधिक दिखाई दी। आयोजन की सबसे बड़ी सफलता इस बात में निहित है कि सभी हिन्दी- अहिन्दी विद्वानों ने एकमत से सभी भारतीय भाषाओं की सांस्कृतिक अविच्छिन्नता को रेखांकित किया और आर्य एवं द्रविड़ जैसे कृत्रिम भाषाई विभाजन को इस आधार पर अमान्य किया कि भाषाओं का मूल शब्दभण्डार एक है अथवा उनमें अन्त: प्रवाहित होने वाली सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना मूलत: एक है। आर्य और द्रविड़ भाषाओं के रूप में उत्तर और दक्षिण के भौगोलिक विभेद के द्वारा भारत की बड़ी जनसंख्या को बाँटने के जाने-अनजाने प्रयासों को इस सम्मेलन ने सिरे से नकार दिया।

प्रथम दिन उद्घाटन सत्र से लेकर अंतिम दिन समापन सत्र तक कार्यक्रम पूर्णत: उत्साह से पूर्ण रहा। उद्घाटन सत्र की सारी औपचारिकताओं के पश्चात् भारतीय खाद्य निगम में कार्यरत मिल युवाओं द्वारा प्रस्तुत 'भांगड़ा' की अत्यन्त सफल प्रस्तुति विस्मय- विमुग्ध करने वाली थी। पंजाबी वेशभूषा में किया गया भांगड़ा नृत्य इतना वास्तविक था कि यह भान ही न रहा कि सभी कलाकार गैर पंजाबी हैं। आयोजकों ने कलाकारों को पुरस्कृत करके बिल्कुल सही किया।

सम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम गोष्ठियों का था, जिसमें कविता, कथासाहित्य, नाट्य-साहित्य, आलोचना, लोक साहित्य, भाषा विज्ञान, प्रयोजन मूलक हिन्दी तथा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के अन्तर्संबंध पर विस्तार से वक्ताओं ने अपने विचार रखे, महत्त्वपूर्ण शोधपत्र पढ़े गये। प्रमुख वक्ताओं में डॉ. एन. शेषन, डॉ. एन. जी. देवकी, डॉ. एन. सुन्दरम, डॉ. दिलीप सिंह, डॉ. पी. सी. कोकिला, डॉ. रविता भाटिया, डॉ. सुनीता जाजोदिया, डॉ. लक्ष्मी अयर, डॉ. कामकोटि, डॉ. शांति मोइनन, डॉ. बशीर अहमद, डॉ. एम. कडू, डॉ. वीरेन्द्र नारायण यादव, डॉ. अजय कुमार, डॉ. सिद्धार्थ शंकर, डॉ. योजना रावत, डॉ. शिव कुमारी आदि ने साहित्य के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अखिल भारतीय साहित्यिक चेतना की अन्तर्धाराओं को रेखांकित करने का प्रयास किया।

प्रेसिडेंसी कॉलेज, चेन्नै की प्रो. पी. सी. कोकिला ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि उत्तर और दक्षिण की भाषाएँ और संस्कृति बिना किसी विरोध के भक्तिकाल में आपस में घुल - मिल गयीं। इसमें शंकराचार्य का भी बड़ा योगदान रहा। डॉ. शिव कुमारी ने इन भाषाओं के बीच शब्दगत, वाक्यगत एवं उच्चारणगत समानताओं पर दिया। उनके अनुसार इन भाषाओं में ढेरों शब्द हैं जो थोड़ी-बहुत उच्चारणगत भिन्नताओं के साथ सभी में उपस्थित हैं। कई वक्ताओं ने तमिल और मलयालम भाषाओं के संदर्भ में हिन्दी के साथ ऐसा ही तुलनात्मक

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

दक्षिण में हिन्दी सम्मेलन, चेन्नै (भारतीय हिन्दी परिषद्)

- प्रस्तुति : डा. अजय कुमार

स्नातकोत्तर विभाग जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा, बिहार

www.shodh.net

अध्ययन प्रस्तुत किया और उन भाषाओं के मूल शब्द भण्डार को रेखांकित किया। डॉ. विमला सिंहल ने अपने वक्तव्य में कहा कि पादरी वगल्डवेल ने सर्वप्रथम भारतीय आर्यभाषाओं से द्रविड़ को अलगाया। वह कार्य वैसा ही था जैसा मेकॉले ने किया था। जहाँ भारतीय भाषाओं को यूरोपीय भाषा -परिवार से जोड़कर उसे वैश्विक रूप दिया जा रहा हो, वहीं भारत की भाषाओं को आर्य और द्रविड़ में बाँट दिया गया। यह एक देश को राष्ट्रीय और सांस्कृतिक रूप से बाँटनें का कुत्सित प्रयास था।

कथा-सहित्य सत्र का अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. एन. शेषन ने कहा कि उत्तर भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्ति की कई समस्याएँ ऐसी हैं जो दक्षिण भारतीयों की संवेदना से अछूती हैं। इसलिए अछूती संवेदना की कहानियाँ दक्षिण में नहीं है। 'तमस' जैसी कथा दक्षिण में नहीं लिखी जा सकती क्योंकि दक्षिण वालों ने विभाजन का दर्द जाना ही नहीं। दक्षिण में 'वापसी' या 'डिप्टी कलक्टरी' जैसी कथाएँ भी परिवेशगत भिन्नता के कारण नहीं लिखी गयी। डॉ. शेषन ने कहा कि उत्तर भारतीयों ने सिंकदर के समय से ही विदेशी प्रहार झेले, खासकर स्त्रियों ने, ऐसा दक्षिण वालों ने नहीं झेला। अत: साहित्य की जो तत्संबंधी संवेदनाएँ उत्तर भारतीय भाषाओं में मिलती हैं वह दक्षिण में नहीं। उन्होंने दक्षिण वालों के परंपरावादी मानस की व्याख्या करतें हुए कहा कि दक्षिण वालों में धार्मिकता और परंपरा पालन का भाव अधिक प्रबल है। परिवारों में टूट कम हुए हैं। इन सबका प्रभाव उनके साहित्य पर पड़ता है। दक्षिण में तुलनात्मक भाषा-साहित्य पर काम अधिक हुए क्योंकि परिस्थितिगत मान्यता के कारण दक्षिण वालों ने एक से अधिक भाषाएँ सीखीं। उन्होंने संत तिरूवल्लुवर के महान् काव्य 'तिरूक्कुरल' के जीवन-दर्शन की चर्चा करते हुए उसमें जैन और बौद्ध तत्व-दर्शन को रेखांकित किया। तिरूक्कुरल जैसे ग्रंथ एक अखिल भारतीय अन्त:संबंध की महागाथा कहते हैं।

प्रयोजनमूलक हिन्दी वाले सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक एवं तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. दिलीप सिंह ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि भारत की सभी सात प्रमुख भाषाओं में कोई व्याकरणिक विविधता नहीं है, यह निश्चित है। इस आधार पर भारत एक भाषा-क्षेत्र है। डॉ. सिंह का वक्तव्य पूरे सम्मेलन का बीज वक्तव्य रहा जिसमें उन्होनें इस तथ्य पर बल दिया कि हम भारत के रक्त में जब तक भारतीय भाषाओं का रक्त प्रवाहित नहीं करते, तब तक उसका वृहत्तर रूप सामने नहीं आ सकता। इसमें अरबी-फारसी शब्दों का उपयोग भी आवश्यक है आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था कि भारत में भाषा-संघर्ष नाम की कोई चीज नहीं है। यह विदेशों की समस्या है, जो तथाकथित वैषम्य उभारा गया वह शीघ्र समाप्त भी हो गया। साहित्य-संस्कृति के माध्यम से एक भारतीयता की भावना को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

वस्तुत: जिन उद्देश्यों को लेकर चेन्नै में इस सम्मेलन का आयोजन किया गया था वह पूर्ण सफल रहा। इसका अनुभव बिना प्रत्यक्षदर्शी हुए करना कठिन है। पूरे सम्मेलन के मध्य आयोजित हिन्दी-अहिन्दी-भाषी कवियों का काव्य-पाठ उत्तर दक्षिण के सांस्कृतिक एकात्म का साक्ष्य बना। बड़ी संख्या में उत्साह पूर्वक जुटे और काव्य-पाठ करते अहिन्दी भाषी कवियों को सुनना अभूतपूर्व था। मंच संचालक बीमा अधिकारी श्री ईश्वर चन्द्र झाँ 'करूण'ने किया। डॉ. वासुदेवन, अवतार कौर विरदी, डॉ. लक्ष्मी अय्यर, श्रावणी पाण्डा, सुधा त्रिवेदी, मणिकंढन, उदय मेघाणी, सुमन अग्रवाल, डॉ. रविता भाटिया- सभी की कविताओं में एक भारतीय चिंताधारा प्रवाहित थी। उत्तर दक्षिण का राजनैतिक विभेद वहाँ न जाने कहाँ बह गया था: ''कश्मीर के मंदिर में केरल का शंख बजे, केरल की इडली पर कश्मीर का केसर सजे''।

पूरा सम्मेलन इसी भाषाई-सांस्कृतिक प्रवाह में डूबता- उतराता रहा। आयोजन सचिव डॉ. मधु धवन, सैकड़ों स्थानीय छात्र-छात्राओं, मणिकंठन जैसे उत्साही- मेघावी शिक्षकों के आयोजन की सफलता के लिए किये गये रात-दिन के कठिन परिश्रम और हिन्दी सीखने की उनकी ललक को भुला पाना असंभव है। हिन्दी और द्रविड़ भाषा- संस्कृति का विभेद कितना सतही है और एकता के स्वर कितने तीव्र इसे इस सम्मेलन ने पुन: पुष्ट किया।